

योगबल

The Power Of Yoga

Class dt. : 14-02-2020

BK Dr. Sachin Bhai

OSB Reception, PB

ओम शांति। पाश्चात्य जगत के लेखक और कवि कहलिल गिब्रान ने एक कविता लिखी है, जिस कविता में एक प्रेमी अपनी प्रेमिका से मिलने आता है। (दस्तक) अंदर से आवाज, कौन है? वो कहता हैं – मैं हूं, तुम्हारा प्रेमी। अंदर मौन सन्नाटा, कोई आवाज नहीं। उसे लगता है, कोई गलती हो गई, वापिस जाता है। फिर चिंतन करता है, प्रेम के विषय में सोचता है, फिर आता है। (दस्तक) कौन हैं? वो कहता है- तुम्ही हो, मैं हूं ही नहीं, बस तुम्ही हो। मौन, सन्नाटा, कोई उत्तर नहीं। फिर जाता है, सोचता है, अब क्या करूं? दरवाजा तो खुला ही नहीं। कई सालों बाद फिर लौटता है, फिर से दस्तक। अंदर से आवाज कौन है? कोई उत्तर नहीं, मैं हूं ही नहीं, तब दरवाजा खुलता है। **प्रेम अव्याख्य है, प्रेम अवर्णनीय है, प्रेम में आत्मा जो अनुभव करती है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।** उसे ऐसी ऐसी चीजें होती हैं, ऐसी ऐसी सूक्ष्म बांतों का अनुभव होता है, जो केवल वो खुद ही समझ सकता है।

*जरा तू इतना बता दे भगवन,
लगी ये कैसी लगा रहा है।
ये अंदर आग जो लग रही है,
ये कौन लगा रहा है?
इतना बता दे, ये क्यों हो रहा है?
मुझी में रहकर मुझी से अपनी
ये खोज कैसी करा रहे हो ॥*

उसे पता है वो अंदर है नहीं, परंतु अनुभव उसको ऐसे होता है कि वो अंदर ही है। अंदर ही बैठकर, मुझ ही से खुद ही को खुद ही की खोज करा रहा है।

ये क्या कर रहे हो तुम?

*हृदय भी तुम हो तुम्ही हो स्पन्दन
प्रेम तुम हो तुम्ही हो प्रेमी ।*

पुकारता मन तुम्हीं को क्यों फिर

तुम्हीं जो मन में समा रहे हो ॥

तू ही समाया हुआ दिल में, फिर भी तुझे पुकार रहा है। तुझे खोज रहा है। तुम्हीं सब कुछ हो

प्राण तुम हो तुम्ही हो प्रियतम

नयन भी तुम हो, तुम्ही हो मधुबन ।

तुम्हे पुकारूं तुम्हीं को दूंदूं

अजब ये लीला करा रहे हो ॥

नई ये लीला दिखा रहा है। ये कैसी लीला है? अंदर तुम बैठे हो और तुमको ही खोज रहा हूं,

भाव भी तुम हो तुम्ही वंदना

संगीत तुम हो तुम्ही हो रचना ।

स्तुति तुम्हारी तुम्हे सुनाऊँ

यह कैसी पूजा करा रहे हो ॥

कर्म भी तुम हो तुम्ही हो कर्ता

धर्म भी तुम हो तुम्ही हो धर्ता ।

निमित्त कारण मुझे बनाकर

ये नाच कैसा नचा रहे हो ॥

ये कैसा नाच नचा रहे हो? परमात्म प्रेम, प्रभु प्रेम और आत्मा इस प्रेम में भगवान से जुड़ जाती है, एक हो जाती है, इस एक होने को ही क्या कहा गया है? योग। और इस योग से बल की प्राप्ति होती है। संसार में जो भी जुड़ाव है उससे शक्ति क्षीण होती है। जहां भी लगाव है, जुड़ाव है, जुटाव हैं, वहां पर शक्तियां नष्ट होती है, व्यय होती है। भगवान से जो जुड़ाव है, भगवान से जो योग है, भगवान से जो जोड़ना है, उसमें शक्तियां भरती है, और उसको कहा जाता है- योगबल।

आज की साकार मुरली। बाबा ने पूछा है योग बड़ा है या ज्ञान? क्या कहेंगे? जैसे भक्तिमार्ग में पूछा जाता है क्या? पुरूषार्थ बड़ा है या प्रालब्ध? तो पुरूषार्थ कहा जाता है। वैसे ही, ज्ञान बड़ा है योग? बाबा ने कहा योग बड़ा है। ज्ञान तो पूर्व तैयारी है, योग की। जीवन का लक्ष्य ज्ञान नहीं है, जीवन का लक्ष्य तो योग है। जीवन का लक्ष्य तो उस परमात्मा तक पहुंचना, उससे जुड़े रहना। योग माध्यम है वहां तक पहुंचने का। तो आज की मुरली में बाबा ने योगबल की चर्चा की है, तो आज हम योगबल की चर्चा करेंगे।

ये योगबल क्या है?

शास्त्रों में योगबल के विषय में क्या लिखा है?

भगवान ने योग के बारे में क्या कहा है?

मुरली में आज के योगबल के कौन से महावाक्य है?

योगबल से किन सिद्धियों की प्राप्ति है?

किन शक्तियों की प्राप्ति होती है?

योग से क्या फायदे होते हैं?

5 बांते आज की साकार मुरली में आई है, योग के बारे में :-

1. पहला : योग से तुम्हारी ज्योति जगती है- भोग से ज्योति बुझती है। आज की मुरली की लास्ट लाइन, अच्छा से पहले। जब तक किसी को ज्ञान नहीं सुनाओ, तब तक खाना नहीं खायेंगे। ऐसा उमंग, उत्साह हो। जब तक किसी को ज्ञान न सुनाओ, तब तक खाना ही नहीं है, ऐसा उमंग उत्साह होना चाहिए। **जहां भोग है वहां पर योग नहीं। भोग ने ही तो आत्मा को कमजोर कर दिया।**

2. दूसरा : योग से आत्मा पावन बनती है, पवित्र बनती है।

3. तीसरा : योग से तुम दुनिया को पावन बनाते हो - अर्थात् इस पहाड़ को उड़ाए। कौन-सा पहाड़ बनाते हो? सोने का पहाड़ बनाते हो। प्रश्न में है - उठाये और मुरली में है - उड़ाये। इस पहाड़ को फूंक देते हो, कलियुग के। पांच तत्व जो तमोप्रधान बन गये, शक्तिहीन बन गये। उनको भी तुम पावन बनाते हो, अपनी योग की शक्ति से, अपने योग के बल से, अपनी योग की पॉवर से। ज्ञान, तत्वों को पावन नहीं बना सकता। योग तत्वों को पावन बनायेगा।

4. चौथा : देहभान में आते हो तो विकार के चेष्टा होती है- चेष्टा अर्थात् कोशिश करना। चेष्टा करना, प्रयत्न करना, चेष्टा करना अर्थात् व्यर्थ प्रयास करना या अनैतिक प्रयत्न करना, ये चेष्टा करना बंद करो। योग विकारों से छुड़ाता है, **योगी कभी विकार में जा नहीं सकता।** आज की मुरली के महावाक्य । योग से विकारों से मुक्ति।

5. पांचवा : कर्मेन्द्रियों पर कंट्रोल – एक-एक कर्मेन्द्रियों में विकार की दुर्गंध है। इन विकारों की दुर्गंध को सुगंध में परिवर्तित अगर करना है तो योग का सौरभ, योग की महक चाहिए। तब ही अपनी कर्मेन्द्रियों पर संपूर्ण अधिकार होगा, कंट्रोल में होंगी। चलायमान नहीं होंगी, चलायमान कर्मेन्द्रियां विकारों की तरफ आकर्षित होती हैं।

योगबल है क्या? **योग की दस परिभाषाएं।** एक-एक परिभाषा में उसका बल समाया हुआ है। शास्त्रों में- योग से 8 सिद्धियों का वर्णन है,

पतंजलि सूत्र में, भागवत में 10 सिद्धियों का वर्णन है,

योग से और योग से लोगों ने बहुत कुछ किया है। विश्वामित्र के पास ऐसी योग की शक्ति थी कि हरिश्चंद्र के पिता, कौन? वो त्रिशंकु। नया स्वर्ग स्थापन कर दिया उसके लिये, ऐसा गायन है। देवताओं ने नीचा फेंका, इसने नीचे गिरने ही नहीं दिया इसलिये बीच में लटका रहा। अगस्त ऋषि का गायन है, पूरा समुद्र पी गये, ये सब ऋषि कौन थे? जिनका शास्त्रों में वर्णन है। यहीं बैठे है सारे अगस्त, कपिल, विश्वामित्र, वशिष्ठ, दुर्वाशा भी है कोई-कोई, श्राप तो उनके मुख पर ही है। योग बहुत करते हैं पर दिन में क्रोध भी बहुत करते हैं। किसी ने जरा गड़बड़ कर दी, कुल्हाड़ी नहीं? श्राप। शंकराचार्य 6 वर्ष की उम्र में सारे शास्त्र पारंगत कर लिये, शास्त्रों में पारंगत हो गया, योगबल। तो योगबल का बहुत गायन है। एक-एक ऋषि, व्यास त्रिकालदर्शी, ये सब कौन सी शक्तियां हैं? योग की शक्तियां है। इनके पास तपोबल था। वन में बैठकर तपस्या करते रहते थे, सुबह से लेकर शाम तक। दिनचर्या उनकी कैसी थी? एक दम संसार से अलग थलग दूर जहां मनुष्यों की आवाज भी नहीं, ऐसे निर्जन स्थान पर बैठकर तपस्या करते रहते थे, और योग का बल जमा करते रहते थे। तो वो ऋषि मुनि कौन हैं? हम तपस्वी आत्मायें।

1. पहला : योग अर्थात् स्मृति - जब स्मृति आ जाती है तो पॉवर आ जाती है। इसलिए योग बल कहा गया है।

2. दूसरा : योग अर्थात् संबंध - जब किसी से संबंध जुड़ जाता है तो अपने आप शक्तियां आने लगती है। क्योंकि संबंध किससे जुड़ा है? वो है कौन? इस त्रिभुवन का स्वामी, इस संसार का नियंता, सर्वश्रेष्ठ सत्ता, जगत का आधार, बीज, चैतन्य बीज, जिसमें सारा संसार समाया हुआ है। उसके साथ संबंध जुड़ गया। प्रेसिडेंट ही दोस्त बन गया, प्राइम मिनिस्टर ही दोस्त बन गया तो फोन की देरी पर हैं बस। एक फोन कर दो, फोन करने की भी जरूरत नहीं, एक मिस्ट कॉल दे तो वो समझ जायेगा इसको क्या चाहिए। संबंध जुड़ा किससे हैं? वो जो सर्वोपरी हैं। वो जो सबकुछ है। **एक अंग्रेजी लेखिका अपनी कविता में लिखती है, भगवान के लिए, Though earth and moon were gone, यदि ये चंद्रमा, ये धरती नष्ट हो जाये And suns and universes ceased to be, ये सारा ब्रह्माण्ड, ये सारी पृथ्वी, कायनात समाप्त हो And Thou wert left alone, अगर तू अकेला रह जाये बस। ये सब कुछ नष्ट होके। Every Existence would exist in thee** । फिर भी सबकुछ तुझ में समाया रहेगा। सब कुछ खत्म होने के बाद

भी तू अगर रहेगा, अकेला। तुझ में सब कुछ रहेगा। उससे संबंध है तो अपने आप पाँवर आ जायेगी। संबंध रूहानी है, अलौकिक संबंध में शक्ति है, लौकिक संबंध बंधन है और अलौकिक परिवार में लौकिक संबंध बनाये जोड़े तो वो भी बंधन बन जायेंगे आत्मा को उड़ने नहीं देंगे। परी नहीं बनोगे फिर संडे की मुरली में था ज्ञान योग के पंख कट जायेंगे। पर कटी चिड़िया।

3. तीसरा : योग अर्थात् मिलन – मिलन हो जाये भगवान से, सुबह-सुबह। सुबह-सुबह पर्वत की चोटी पर जाकर उससे मिलकर आ जाओ। नीचे आकर गांव वालों से मिलकर कहो हम किससे मिलकर आये पता है क्या? वो जिसकी तुम पूजा करते हो। उसने साक्षात् हमें दर्शन दिये हैं। तुम्हें तो स्वप्न में देते है। हमें तो अपरोक्ष दर्शन दिये हैं। डायरेक्ट, हमसे बात करता है। अभी-अभी भगवान से बात करके आये हैं। और उसने ही मुझे प्रेरणा दी है, कि यहां यह करो, वहां वो करो। गांव वाले देखते रहेंगे अच्छा। आपके लिये ही बैठा है भगवान? कहना हां बैठा है। मिलन हो जाये, योग अर्थात् मिलन और जो भगवान से मिलन होता है वहां पर शक्तियां आ जाती है, योगबल भर जाता है। वो बल है। योगबल अर्थात् क्या? बल क्यों कहा है योग को? क्योंकि योग मिलन की अवस्था है। दैहिक मिलन शक्तियों को नष्ट कर देता है। अलौकिक मिलन शक्तियां भर देता है। दैहिक मिलन frustration, कुण्ठा पैदा करता है। अलौकिक मिलन अतीन्द्रिय सुख को उत्पन्न करता है।

4. चौथा : योग अर्थात् लगन में मगन - लगन लग गई है बस। उसी का चिंतन है, उसी का ध्यान है और कुछ सूझता ही नहीं, और कुछ अच्छा ही नहीं लगता हैं, भोजन, भवन भलो नहीं लागे। कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। वो ही अच्छा लगता है बस उस का ही रूप अच्छा लगता है। क्योंकि हम भी उसी के उस ही रूप में स्थित है। इसीलिए वो अच्छा लगता हैं और जब हम देह में है तब उससे बहुत दूर है। तब देह के लोग देह, दुनिया अच्छी लगती है। पर जब हम उसी के जैसे है, तो अपने आप लाइट, अट्रैक्शन होता है इधर। तो योग अर्थात् लगन में मगन अवस्था।

5. पांचवा : योग अर्थात् यात्रा- याद की यात्रा है, योग। ये वो तीर्थ यात्रा है, तीर्थ यात्रा पर जाने के बाद में व्यक्ति कैसा होता है? पाँवरफुल। चार्ज हो जाता है। संसार के भोग विलास में डूबा रहता हैं और अचानक एक दिन तीर्थ जाता है, तीर्थ पर आने के बाद पाँवरफुल हो जाता है। क्योंकि अपने आप पुण्य कर्म होते हैं, तीर्थों में दान, पुण्य करता है, तीर्थों में विकारों में नहीं जाता है, तीर्थों में ऐसी नशीली दवाइयां, द्रव्यों का सेवन नहीं करता हैं, किसी को दुःख नहीं देता है, अति सुशील बन जाता है, सभ्य बन जाता है, धार्मिक बन जाता है। प्रवचन सुनता है थोड़े बहुत, मंदिरों में जाकर पूजा, आरती, जप यज्ञ करता है। तो ये भी वो यात्रा है।

तुम्हारा सबसे बड़ा तीर्थ परमधाम है, वहां जाकर तुम आते हो। तो आने के बाद शक्तिशाली तो होंगे। इसीलिए योगबल का गायन है। तो योग अर्थात् आत्मा को स्मृति आते ही आत्मा शक्तिशाली बनती है।

6. छठवां : योग अर्थात् समर्पण - आत्मा अपने आपको समर्पण, अपने आपको स्वाहा कर देती है। किसके आगे समर्पित करती है? वो जो संसार का नियंता है, वो जिसकी गारण्टी है। *अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः; सर्वधर्म परित्यज्य।* सब कुछ छोड़कर मेरी शरण में आओ। *मन मनाभव, मद्भक्तो मद्याजी मां मन मुस्कुरा।* बस मेरा ही गुणगान कर, मेरी ही शरण में आ। भगवान कहता है बाइबिल का, मुझे अपने साथ रखो, मेरा वजन बहुत कम है, मैं भारी नहीं हूं, मैं बहुत हल्का हूं। पर तुम आते ही नहीं। योग अर्थात् समर्पण और जहां आत्मा समर्पण कर देती है, अपना उसमें अपने आप पॉवर भरती है। क्योंकि अब वह आत्मा की पॉवर नहीं, उसकी पॉवर इससे चलेगी, उसकी पॉवर इसमें भर जाती है।

7. सातवां : योग अर्थात् अटेंशन- जब व्यक्ति अटेंशन में रहता है, पॉवरफुल रहता है और जब उसका अटेंशन बिखरा है, तब वह पॉवरफुल नहीं है।

8. आठवां : योग अर्थात् एकाग्रता- एकाग्र है, कांच एकाग्र है, सारी किरणें एकाग्र हो जाती हैं कांच में और जलने लगता है। वैसे कागज को दिनभर रखो सूरज के नीचे जलता है क्या? नहीं जलता। कब जलता है? जब मैग्रीफाइंग ग्लास रखा जाता है, किरणें आती हैं। परावर्तन, रिफ्रेक्ट और जलने लगता है। इसलिए योगबल है क्योंकि एकाग्रता में बल है। स्वामी विवेकानंद ने एक जगह लिखा है- *If I Have Begin My Education All over Again, I Will First Master The Art Of Concentration & Then At One Go Gether All The Information.* अगर मुझे अवसर दिया गया तो मैं सबसे पहले एकाग्रता की शक्ति हासिल करूंगा। अगर मुझे फिर से छोटा बच्चा बनाये जाये, सबसे पहले मैं ये काम करूंगा, और संसार में फिर जितना ज्ञान है। त्रिभुवन में वो एक धक से आत्मसात कर लूंगा। एकाग्रता।

9. नौवां : योग अर्थात् आत्म अभिमानी स्थित, और परमात्म अभिमानी स्थिति- Soul Consciousness And God Consciousness जब हम Soul Conscious हो जाते तब परमात्म Conscious होने की आवश्यकता ही नहीं है। बाबा को याद करने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि आत्मा समझते ही, सबकुछ स्वतः ही होने लगता है। **सारा पुरुषार्थ ही आत्मा समझने का है।** कल क्या कहा था? यर्थात् याद अर्थात्? आत्मा समझकर याद करना और शरीर को भूल जाना। अपनी देह भी याद न आये। किसी की भी देह याद न आये।

10. दसवां : योग अर्थात् शक्तिपात- Energy Transference. आत्मा में परमात्मा की शक्तियां भर रही है। शक्ति पात जिसको कहते हैं। इसलिए योग बल क्योंकि उसमें शक्तिपात हो रहा है। शक्तियां भर रही है उसमें और जिसमें योगबल है। उसमें सिद्धियां आ जाती है। कौन-कौन सी सिद्धियां? शास्त्रों में आठ मुख्य सिद्धियों का गायन है, कौन-कौन सी?

1. पहली सिद्धि : अणिमा अर्थात् छोटा हो जाना।

2. दूसरा : महिमा अर्थात् बड़ा हो जाना। ये वास्तव में दिखाया है। जैसे हनुमान जी का दिखाया है, लंका के द्वार पर पहुंचते हैं और लंका खड़ी ही वहां पर, क्या करता है वो? छोटा बन जाता है और कभी बड़ा भी बन जाता है। यहां क्या है इसका अर्थ? अलौकिक भाषा में योग करते करते हममें यह दो पॉवर आ जायेगी। कौन सी दो पॉवर? सार-विस्तार और जब चाहे वहां छोटा हो जाना, जहां चाहे वहां बड़ा हो जाना। मास्टर बालक, मालिक ये भी उसके अर्थ हो सकते हैं। छोटा सा हो जाना अर्थात् अति सूक्ष्म हो जाना अर्थात् बांतों को सूक्ष्मता से जानना, समझना या बड़ा हो जाना। दोनों चीजे उसमें अणिमा, महिमा ।

3. तीसरा : गरिमा अर्थात् भारी

4. चौथा : लघिमा - लघिमा अर्थात् हल्का।

जब चाहे तब हल्का हो जाना, जब चाहे तब भारी हो जाना। हल्का कब होंगे? परिस्थितियों में, भिन्न-भिन्न बातें जो होती हैं उसमें हल्का रहना। किसी ने कुछ बोल दिया, हल्का। और भारी कब होंगे? माया पर भारी हो जाओ एकदम। भारी हो जाना अर्थात् पॉवरफुल हो जाना, शक्तिशाली हो जाना। **उसको कहते हैं गरिमा, लघिमा ।** ये दो सिद्धियां हैं, योग की सिद्धियों का गायन है।

5 पांचवा : प्राप्ति - बिना रोक-टोक कहीं पर भी जा सको। बिना रोक-टोक सूक्ष्म शरीर धारण करो, और कहीं पर भी घूमो। इसको कहते एस्ट्रल प्रोजेक्शन। कहीं पर भी संसार में जा सकते हो, किसी के भी पास जा सकते हो, बिना रोक-टोक के। कोई नहीं कहेगा यहां मत जाओ, किधर भी। किसी के पास भी जाओ, सकाश दो और वापस आ जाओ। उसको कहते हैं प्राप्ति।

6 छठवां : प्रकाम्य- अर्थात् जो भी इच्छाएं वह पूर्ण हो जाये। केवल इच्छा करने की देरी है। हम इच्छा करेंगे, और वो पूर्ण होगी।

7 सातवां: ईशत्व - अर्थात् किसी पर भी अधिकार, आधिपत्य ये भगवान के लिये कहा जाता है- ईशत्व । ईश्वर का गुण है ये।

8. आठवां : वशित्व - किसी को भी अपने वश कर सकते हो, वशीकरण मंत्र। पति को वश में करने का मंत्र अलग, पत्नी को वश में करने का मंत्र अलग, ऐसे वो लोग देते हैं न? सासु को वश में करने का मंत्र ।

ये सारी सिद्धियां है, इसको 8 सिद्धियां कहते हैं। ये आठ सिद्धियां है, ये पतांजलि योग सूत्र में है परंतु भागवत की 10 सिद्धियां अलग है। भागवत में भी 10 सिद्धियों का वर्णन है ।

1. पहला : अनुरमीमत्वं (anūrmimattvam) - अर्थात् न भूख न प्यास, कुछ नहीं सतायेगी। ये सिद्धि है। अनुरमीमत्वं ये संस्कृत शब्द है अर्थात् भूख प्यास, योगी कहां बैठते? हिमालय में। वहां न तो पानी है। वहां न तो भोजन है। हां, जंगल में जो बैठते उनके पास तो भोजन पानी मिल जाता है पर जो हिमालय में बैठते है वहां कुछ भी नहीं है। फिर भी सालों साल रहते हैं। कैसे? क्योंकि उनके पास ऐसी कुछ सिद्धियां आ जाती हैं कि आवश्यकता ही नहीं रहती है सब चीजों की। सूर्य योगी, सूर्य की किरणों से ही भोजन ग्रहण कर लेते है। वायु योगी, वायु से ही भोजन ग्रहण कर लेते है। फिर किसी चीज की आवश्यकता नहीं होती। उनको ये सिद्धियां है। चंद्रगुप्त के जीवन में दिखाया गया है, चंद्रगुप्त भटक गया है छोटा सा बालक है और वो एक साधु वहां बैठा है। तो कहता है कि मुझे प्यास लगी है पानी कहां है? पानी उधर है जाओ उधर पर वहां एक बाघ है, देखो कैसे जाओगे वहां पर? और वो कहता है आप क्या करते हो? वो कहता है ये मनुष्यों की विवशता है भूख, प्यास। इन विवशताओं के साथ कोई तपस्या नहीं कर सकता। वो साधु ऐसा कहता है उसको, चंद्रगुप्त जाता है, वो बाघ होता है फिर भी वो चुपके से जाता है, पानी भरकर आता है। साधु उसको कहता है, तुम वापिस कैसे आ गये? वो कहता है बस में जाकर आ गया। बाघ था? वो कहता हां था। तुम डरे नहीं? नहीं डरे। वो कहता, ये बालक साधारण बालक नहीं है, ये जरूर कोई विशेष बालक है। यह भारत का सम्राट होगा, भारत का प्रथम सम्राट । तो सबसे पहली शक्ति क्या है? भूख, प्यास से व्यक्ति ऊपर उठने लगता है और जो भोगी है वो दिन- रात क्या चिंतन क्या करता है? आज क्या बना है? ये बन गया, अब दोपहर में क्या बनने वाला है? शाम को टोली में क्या है? दिन-रात भोजन का ही चिंतन करते रहता है। भोजन, भोजन, भोजन, भोजन का भजन करता रहता है। क्या खाऊं? और किसको खाऊं? किसका दिमाग खाऊं? ।

2. दूसरा : दूर श्रवण (dūraśravaṇa) - यहां बैठे हुए वहां की आवाजें आने लगती है। किसी से पूछने की जरूरत नहीं? जैसे संजय को आवाज आ रहा है? दूरश्रवण। क्लायर ऑडियन्स। क्लायर ऑडियन्स अर्थात् यह साइकिक पॉवर (Psychic Power) है। पैरानार्मल पॉवर कहा जाता है इसे, यहां बैठे हुए व्यक्ति दूर की आवाजें सुनने लगता है। एक है क्लायर ऑडियन्स दूसरा है क्लायर वॉयन्स।

3. तीसरा : दूरदर्शनम (dūradarśanam): Seeing things far away सुनना और देखना ये शक्तियां हैं, जा नहीं रहे, यहीं बैठे हुए वहां के दृश्य दिखाई दे रहे। ये मुरलियों में कहां है बाबा ने, तुमको सबकुछ दिखाई देगा, एक समय आयेगा। आवाज सुनाई देगी, दूर के दृश्य दिखाई देंगे, क्या हो रहा है। जैसे-जैसे तुम्हारा योगबल बढ़ता जायेगा, ये शक्तियां तुम में आने लगेंगी।

4. चौथा : मनोजवा (manojvah)- मतलब शरीर को जहां चाहे वहां ले जा सकते। सूक्ष्म शरीर को एक जगह बैठकर, सूक्ष्म शरीर के साथ पूरी पृथ्वी की परिक्रमा करना। एस्ट्रल प्रोजेक्शन जिसको कहते। या टेली पोर्टेशन।

5. पाचवा : कमारूपम (kāmarūpam)- अर्थात् जो भी रूप बनाना है अपना वो बना सकते हो। जैसे रावण के पास शक्ति थी न, ब्राम्हण बन गया, कुछ बन गया। वैसे कुछ भी बना लो। कभी फरिश्ता बन जाओ, 5 स्वरूप। 1 घंटे में कितनी बार? 5 सेकेण्ड या 5 मिनट होमवर्क दिया है चालू है? अच्छा, अभी याद आया। बहुत दिन हो गये वैसे मुरली को, एक-एक घण्टे में करने वाला था बाबा ने, दूसरे काम आ गये न, रोज की मुरली वाले।

6. छठा : परकाया प्रवेशम् (parakāya praveśanam)- दूसरे के शरीर में प्रवेश कर जाना। जैसे शंकराचार्य का दिखाया है, क्या करता है वो? अपने शरीर को अलग कर देता है, शिष्यों को कहता है, इसका ध्यान रखना और राजा के शरीर में प्रवेश कर जाता है। यहां नहीं बनना कोई शिष्य?

7. सातवा : स्वछंद मृत्यु (svachanda mr̥tyuh)- अपनी मृत्यु खुद डिसाइड करना, स्वेच्छा मृत्यु। आज इतने बजे जाने का समय है। हमने देखा है ऐसे कई-कई patients सुबह-सुबह बोल देते हैं। कि आज बस अब, पूरा करना है कोई न कोई इशारा दे देते कई बार। कोई कोई सारे नहीं, बड़े रेयर कोई कोई पैसेन्ट्स ऐसे होते जो इशारा दे देते हैं। नहीं तो कैसे? असंभव ये यह बताना, असंभव। कितना भी सीरियस पैसेन्ट्स हो, पर ये कोई नहीं कह सकता कि आज जायेगा। इच्छा मृत्यु। जगदीश भाई को भी पता चल गया न था। स्वामी विवेकानंद का भी दिखाया है, वो पांचांग लेकर बैठ गये, देख रहे कब जाऊं? अच्छा ये डेट, उसको टिक मार्क भी करके रख दिया। वो क्यों किया? किसी को पता नहीं। वो तो जाने के बाद लोगों ने देखा। ये क्यों गोल करके रखा है। तो कई सारे संसार के महान योगी हुए हैं, जिन्होंने डिसाइड कर लिया पहले ही, कि हमको यह तारीख को जाना है। विनोबा भावे भी पहले भी बता दिया था, काम पूरा हुआ है, जा रहा हूं। यह शक्ति है।

8. आठवा : देवानाम सह क्रीडा अनुदर्शनम् (devānām saha krīḍā anudarśanam) – देवताओं के साथ क्रीडाएं करना, खेलना, कूदना, मस्ती करना।

9. नौवा : यथा संकल्प सम सिद्धि (yathā saṅkalpa saṁsiddhiḥ) - जो संकल्प किया वो सिद्ध हो जाना। ये सिद्धि है। संसार के लोग सभी करते हैं, नये वर्ष में तो बात मत पूछो। 31 दिसंबर को कितने संकल्प करते हैं लोग। एक बड़ा अच्छा चित्र आया था ये हैं 31 दिसंबर, ये हैं 1 तारीख। 31 दिसंबर को वो कुछ और कर रहा है, यहां पर संकल्प करता है, पॉवरफुल और वापिस 1 तारीख को वहीं करता है जो 30 तारीख को कर रहा है। खाली 1 दिन के लिये था वो। बस।

10. दसवां : आज्ञा प्रथीथ (ājñāpratihatā gatiḥ) – जो आज्ञा कर सकता है, तत्वों पर ऑर्डर कर सकता है। तत्वों पर आदेश। जैसे जीजस क्राइस्ट का दिखाया है- आज्ञा करता है। पीस, बी स्टिल, शांत हो जा, तूफान शांत हो जाता। तत्वों को आदेश करता है। तो इसको कहा जाता है, ये सारी हैं सिद्धियां।

और ऐसे तो बहुत सारी सिद्धियां हैं जैसे यूरी गैलर – चम्मच को अपने मन की शक्ति से मोड़ देना, ट्रेन को रोक देना, ये सारी सिद्धियां होती हैं। तो ये सब मत करते रहना, ट्रेन को मत रोकना और सिद्धियों के नुकसान भी है। जैसे वो रामकृष्ण परमहंस बताते हैं, एक योगी इतना सिद्ध हो गया कि उसकी पास सिद्धियां आ गईं। इतनी खुशी हुई उसको, ऊपर देखा, आग दृष्टि दी, वो पक्षी ने कुछ गिरा दिया उस पर गंदा कर दिया, क्रोध आ गया। पक्षी को देखा और पक्षी जल गया। खुशी, कि मुझे सिद्धियां प्राप्त हुईं। आंखों से ऐसी रोशनी निकली, आग निकली वो पक्षी जल गया। फिर उसके बाद उसने देखा एक जहाज है बहुत बड़ी जा रही है। और वो सोचता है, अब मैं अपनी सिद्धि का प्रयोग करता हूं, और वो हवा को रोक देता है। हवा रूक गई। इतनी उसको खुशी होती, कितनी पॉवर मुझ में आ गई। हवा रूक जाती है, जहाज डूब जाता है, जितने लोगों वो जहाज में थे, सब डूब गये। उनके पाप का बोझ इसके ऊपर, सिद्धियां खलास। तो योग का बल जमा करना है। और योगबल जैसे - जैसे जमा करते जायेंगे। बहुत सारी शक्ति हममें आती जायेंगी, जो संकल्प करेंगे वो सिद्ध होने लगेंगे। पर हां किसी को बताना नहीं फिर नहीं तो कहेंगे हमने आज सवेरे यहीं सोचा था और यही हो गया। एक बार एक माता आई थी यहां पर इसी क्लास में वो बता रही थी कि मुझमें ऐसी सब सिद्धियां आ गई हैं, मैं क्या करूं? सेंटर की मुरली क्लास पूरी होती है, सारे स्टूडेंट्स घेर लेते हैं और कोई कहता है मुझे पीठ दर्द है, वो हाथ लगाती वो पीठ दर्द ठीक होता है।

किसी को कोई बीमारी है वो बीमारियां ठीक होती हैं, ये सब सिद्धियां उसको अपने आप आ गई हैं। कोई आत्मा आई होगी कहीं से तो क्या करूं? हमने कहां बंद कर दो उसको, तुरंत स्टॉप। नहीं तो यहीं माया हो

जायेगी, ये माया है नहीं तो। जो भी साधना करेगा उसको सिद्धियां प्राप्त होंगी। जो भी, किसी भी तरह की ये ही राजयोग नहीं, कोई भी योग संसार का, कोई भी अपने आप सिद्धियां आने लगेंगी। क्योंकि सिद्धियों के लिये प्यूरिटी चाहिए और प्यूरिटी का परिणाम तो होगा ही। जो भी साधना करेगा उसमें अपने आप पॉवर आने लगेगी। तो योगबल हमें जमा करना है। पर हमें अपना योगबल किसलिये जमा करना है? विश्व का कल्याण करने के लिये, विश्व को पावन बनाने के लिये, ना ही किसी की बीमारी ठीक करने के लिये। स्वामी विवेकानंद दिखाया है, वो योग में बैठते और उनको बहुत पॉवर अनुभव होता है। फिर उनका जो मित्र है राखाल, उसको कहते हैं, वो कहता है मेरे घुटनों में दर्द हो रहा है, वो कहते हैं आओ और अपना हाथ रखता है और लंबा समय तक हाथ रखा रहता है। और सारा योगबल, पूरी शक्ति, एकाग्र कर संकल्प करता है, कि ये ठीक हो जायेगा और वो कहता है, एकदम ठीक हो गया। वो गुरुजी आते हैं कहते हैं, अरे मूर्ख, तुमको ये शक्तियां घुटने दर्द करने के लिये दिये हैं क्या? कि विश्व का कल्याण करने दी है। ये शरीर तो आज ठीक हुआ, वापस बीमार पड़ेगा कल। ये आत्मा के कल्याण के लिये है, न कि ये सब शरीरों के लिये। शरीर तो आज है, कल गया। कितनी भी बड़ी बीमारी है, उससे निकल गया। कितनी बार ऐसा हुआ पेसेन्ट 15 दिन हॉस्पिटल में एडमिट होता है, बहुत बड़ी बीमारी होती है। और सब कुछ ठीक, वेंटीलेटर ये वो निकल गया। और डिसचार्ज हुआ, डिसचार्ज होते ही हॉस्पिटल की सीढ़ियों पर फिर गिरता है और गया, डेथ। कितनी डेथ हुई गिरने की वजह से। तो हमारा योगबल ये सब चीजों के लिये नहीं है। हां अपने शरीर की बीमारियों पर उसका प्रयोग किया जा सकता है। वो ठीक है। वो भी निस्वार्थ भाव से कि हम अपने शरीर को 5 मिनट सकाश दे दें, सुबह-सुबह कि ये स्वस्थ रहें, योगी, ये कर्मेन्द्रिय शिथिल रहें। इसकी सारी बीमारियां दूर हो जाये। पर इसको बिजनेस नहीं बना देना है कि आ जाओ क्या हो रहा है, जाओ ठीक हो जायेगा। इसमें माया है बहुत बड़ी।

योगबल जमा करना है, योग की शक्तियां अपने अंदर भरनी है। योग की जो 10 परिभाषाएं बताई हैं जब भी योग में बैठे एक-एक परिभाषा को याद करें, तो उसी में 1 घंटा बहुत अच्छा योग हो जायेगा। स्मृति है, योग में मगन हो रहे है, उससे संबंध जोड़ रहे हैं अटेंशन एकाग्र हो रहे हैं। उसके साथ मिलन मना रहे हैं, आत्म अभिमानी बन रहे हैं। उसमें शक्तिपात, उसकी शक्तियां मुझ में आ रही है। समर्पित हो रहे, उसके सामने। ये परिभाषा में ही शक्तियां समाई हुई है, ये ही शक्तियां है और ये शक्तियां हमें विकारों में जाने से बचायेंगी। इंद्रिय चंचल नहीं होंगी। चेष्टाएं नहीं होंगी विकारों की, अपने आप कंट्रोल आ जायेगा कर्मेन्द्रियों पर, यहीं तो बल है योग का। इसको जमा करना है।

ओम शांति